समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation



कक्षा - 7

हिंदी (पल्लव)

अध्याय – 14

आओ, स्कूल चलें

भाग – 2

मिताली कुमारी

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

मोहनलाल : (गोपाल बाबू को समझाते हुए) पर देखिए गोपाल बाबू, इन्हें अब काम करना नहीं, पढ़ाई करनी चाहिए। सबको यह बात गाँठ बाँध लेनी चाहिए कि बच्चों को काम पर नहीं, स्कूल भेजना चाहिए।

गोपाल बाबू : क्या लाभ होगा इन्हें पढ़ाकर। कौन-सा लाट साहब बनेंगे ये? घर का खर्चा चलाना मुश्किल है और इनकी पढ़ाई का खर्च भी ऊपर से लाद लें?

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation



(सुबोध और संध्या का प्रवेश)

सुबोध : अरे गोपाल बाबू आप खर्च की चिंता क्यों करते है? बच्चों को तो बस स्कूल भेज दें, पढ़ाई का खर्च सरकार का। समझे न?

संध्या : अब तो आपलोग समझ गए होंगे कि बच्चों को काम पर नहीं लगाना चाहिए, उन्हें बस पढ़ाई के लिए स्कूल भेजना चाहिए। खर्च की चिंता नहीं। सरकार छह साल से चौदह साल की उम्र तक के सभी बच्चों की पढ़ाई का खर्च खुद उठाने का फैसला ले चुकी है।

तो इसका फायदा क्यों न उठाएँ? समझ गए न?

कई लोग : हाँ, हाँ हम समझ गए। हम समझ गए।

एक आदमी : हाँ, मैं कल से ही बबुआ को फिर स्कूल भेज दूँगा।

दूसरा आदमी : हाँ, हाँ। मैं भी, हम न पढ़े तो क्या हुआ, बच्चों को तो मौका मिलना चाहिए।

सुबोध : बहुत खूब, आपलोग अपने बच्चों को तो पढ़ाइए ही और दूसरों को भी पढ़ाने की सलाह दें। तभी सब बच्चे पढ़ पाएँगे, देश की भी तरक्की होगी। सब मिलकर गाते हैं :

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation



आइए सब हाथ मिलाएँ,
बच्चों को हम स्कूल भेजें।
सभी बच्चे पढ़ें-लिखें,
देश बहुत तरक्की करें ।।

(दृश्य बदलता है। एक तरफ से मास्टरजी और दूसरी तरफ से सूरजमल का प्रवेश)

सूरजमल : नमस्ते मास्टरजी !

मास्टरजी : नमस्ते, नमस्ते सूरजमलजी ! बहुत दिनों के बाद दर्शन हुए। कहिए आपकी बेटी की पढ़ाई कैसी चल रही है ?

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

सूरजमल : उसे तो स्कूल से छुड़वा दिया मास्टरजी! अब जरा घर का काम-काज भी सीख ले तो काम आएगा। शादी हो जाएगी तो घर का काम-काज ही तो. संभालना होगा न। कहाँ नौकरी करने जाएगी वह?

मास्टरजी : नहीं, नहीं। आप गलत सोचते हैं। सिर्फ नौकरी करने के लिए ही पढ़ाई नहीं करनी है। पढ़ाई करने से बहुत फायदे मिलते हैं, समझ बढ़ती है, सूझ-बुझ अच्छी होती है। आखिर बेटी भी तो एक दिन माँ बनेगी न? अपने बच्चे की अच्छी परवरिश के लिए, पढ़ाई-लिखाई के लिए उसे भी तो सोचना होगा न?

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

सूरजमल : हाँ, हाँ। यह तो अब मुझे भी लग रहा है। इस बार घर लौटकर उसे स्कूल भेजना होगा।

मास्टरजी : बहुत अच्छा। पढ़-लिखकर आपकी बेटी आपका नाम रोशन करेगी। याद रखें- पढ़ाई ही बेटी का असली गहना है।

सब मिलकर गाते हैं :

घर का काम-काज बड़े करें,
बेटी को पढ़ने स्कूल भेजें।
पढ़-लिखकर वह समझदार बनेगी,
माँ-बाप का नाम रोशन करेगी।



(दृश्य फिर बदलता है। मास्टरजी, सुबोध, संध्या और रजनी लोगों को समझाते हैं।)

सुबोध : आजकल तो स्कूल का माहौल ही अलग हो गया है। पढ़ना-लिखना अब मुश्किल नहीं, मजेदार हो गया है।

संध्या : आजकल स्कूल में अध्यापक-अध्यापिका बच्चों को मारते-पीटते नहीं, खेल-खेल में, नाचते-गाते और कहानी सुनाते उन्हें सिखाते हैं।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

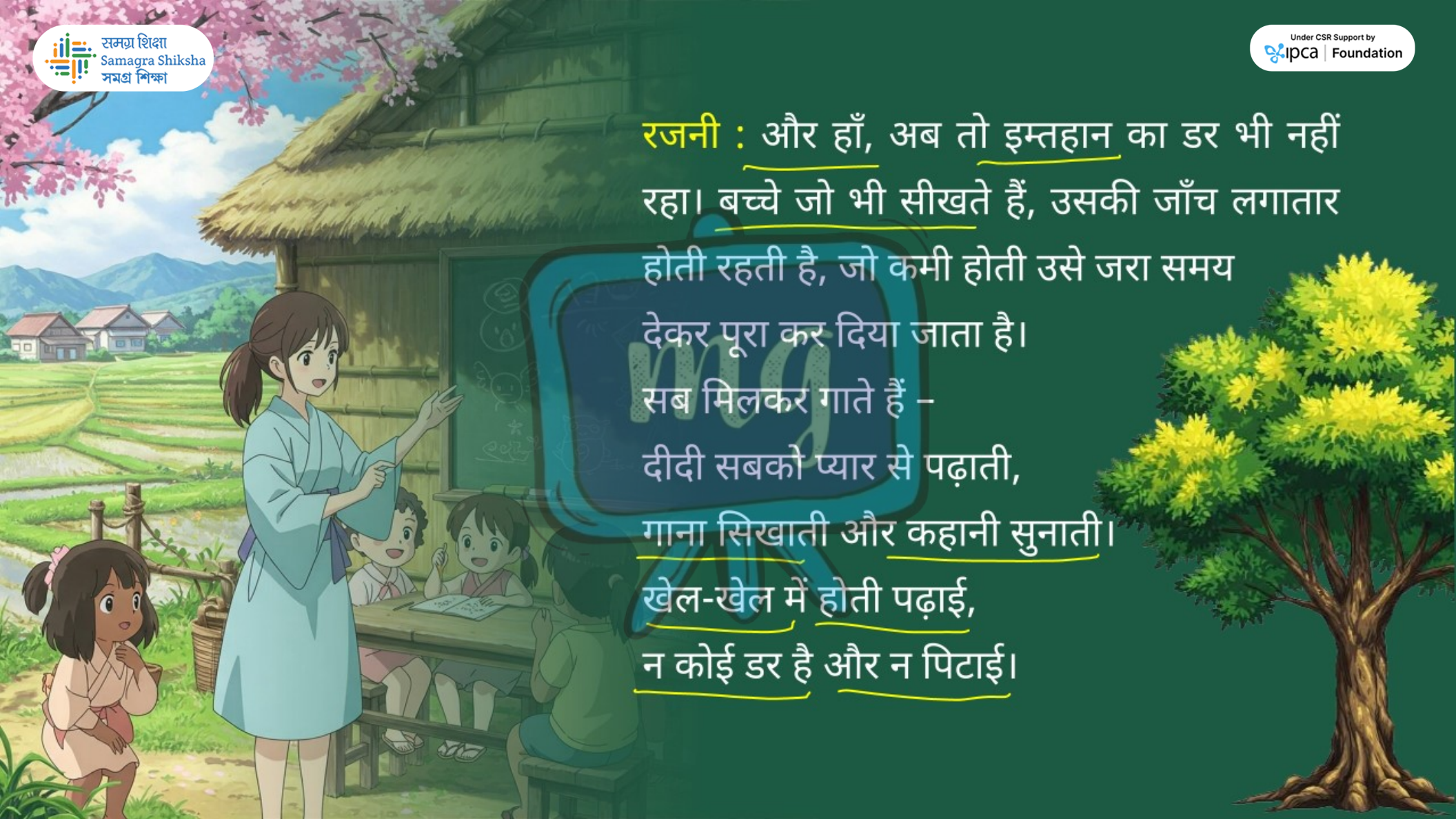

रजनी : और हाँ, अब तो इम्तहान का डर भी नहीं रहा। बच्चे जो भी सीखते हैं, उसकी जाँच लगातार होती रहती है, जो कमी होती उसे जरा समय देकर पूरा कर दिया जाता है।

सब मिलकर गाते हैं –

दीदी सबको प्यार से पढ़ाती,
गाना सिखाती और कहानी सुनाती।
खेल-खेल में होती पढ़ाई,
न कोई डर है और न पिटाई।



परीक्षा का भूत भाग गया,
किस्मत का ताला खुल गया।
पढ़ाई नहीं कहीं अधूरी रहती,
प्यार से दीदी बार-बार सिखाती ।

श्यामलाल : तो अब बढ़िया है! अपने बच्चे को तो हम खूब पढ़ाएँगे।

गंगाप्रसाद : हाँ, यार। इनका भाग्य अच्छा है। इन्हें जरूर आगे बढ़ना चाहिए।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

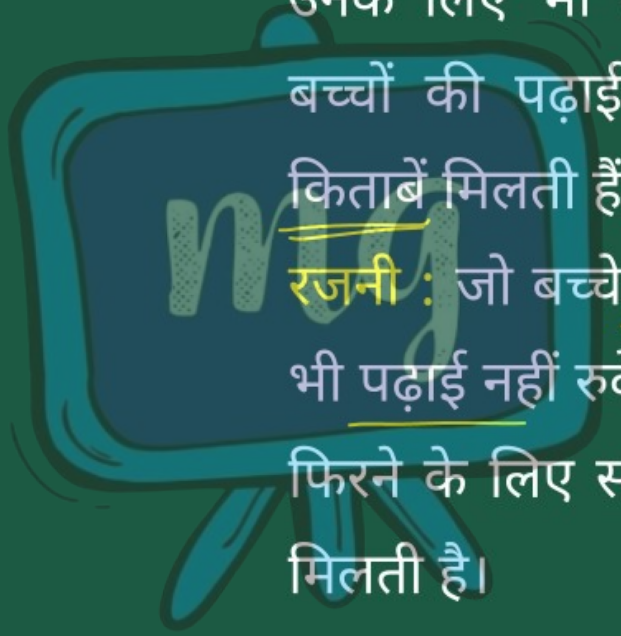

सुबोध : और देखिए, जो बच्चे देख नहीं सकते उनके लिए भी अब पढ़ना मुश्किल नहीं है। उन बच्चों की पढ़ाई के लिए 'ब्रेल लिपि' में लिखी किताबें मिलती हैं।

रजनी : जो बच्चे शारीरिक रूप से अक्षम हैं उनकी भी पढ़ाई नहीं रुकेगी। उनके आने-जाने और चलने-फिरने के लिए सरकार की तरफ से विशेष सुविधा मिलती है।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

मास्टरजी : अब आपलोग ही सोचें, जब सरकार बच्चों की पढ़ाई के लिए इतनी सारी सुविधाएँ दे रही है तो आपलोग इनका फायदा क्यों न उठाएँ?

सब मिलकर गाते हैं –

बच्चों को अब स्कूल जाने से कौन रोके?

ठीक है भाई, ठीक है, चलो सब स्कूल चलें।

नाटक समाप्त हुआ। कुछ लोगों के मन पर इसका असर भी हुआ। उसे देखने के बाद कुछ लोग स्कूल से छुटे हुए अपने बच्चों को फिर से स्कूल भेजने लगे। बाकी लोगों को मास्टरजी के नेतृत्व में युवा दल के लोगों ने फिर समझाया और उनके बच्चों को भी फिर से स्कूल लाने में सफल हो गए। अब उस गाँव में सब बच्चे स्कूल जाते हैं।

— गोलोक चंद्र डेका

मूल्यांकन



1 | सिर्फ नौकरी करने के लिए ही पढ़ाई नहीं करनी है।

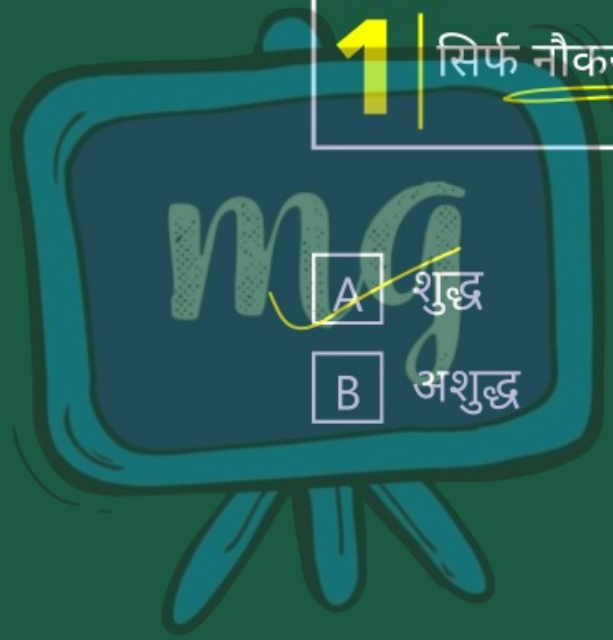

मूल्यांकन



2 | पढ़ाई करने से बहुत फायदे मिलते हैं, समझ बढ़ती है, सूझ-बुझ अच्छी होती है।

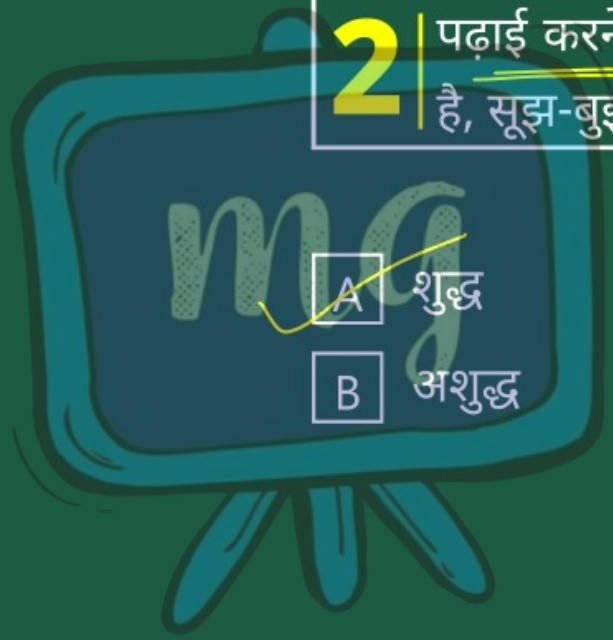

मूल्यांकन



3 | बहेरे बच्चों की पढ़ाई के लिए 'ब्रेल लिपि' में लिखी किताबें मिलती हैं ।

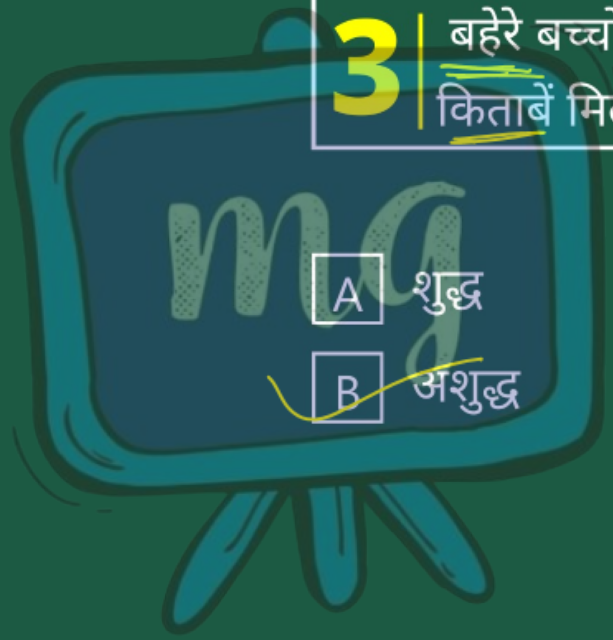

A शुद्ध

B अशुद्ध